मीठे प्रातःवास 2-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे यह तो जानते हैं कि हम बाप के सामने बैठे हैं। वही बाप है फिर टीचर के रूप में पढ़ाने वाला भी है। वही बाप पतित पावन सदगति दाता भी है। साथ ले जाने वाला भी है। और रस्ता भी बहुत सहज बताते हैं। पतित से पावन बनाने लिए कोई मेहनत नहीं देते। कहां भी जाओ घूमते-फिरते, बिजनेस में जाते अपने को आत्मा समझो। सो तो समझते ही हो परन्तु फिर भी कहते हैं अपने को आत्मा निश्चय करो। देह-अभिमान को छोड़ कर आत्म-अभिमानी बनो। हम आत्मा हैं। शरीर लेते हैं पार्ट बजाने लिए। एक शरीर से पार्ट बजाकर फिर दूसरा लेते हैं पार्ट बजाने लिए। किसका पार्ट 100 वर्ष का है, किसका दो वर्ष का है किसका 6 मास का। कोई तो जन्म लेते ही खत्म हो जाते हैं। जन्म होने से पहले ही खत्म हो जाते। शरीर में प्रवेश किया उसका भी जन्म हो गया। कोई आत्मा ने प्रवेश किया। गर्भ होता है तो समझा जाता है कोई आत्मा आवेगी। अभी यहां के पुनर्जन्म और सतयुग के पुनर्जन्म में रात-दिन का फर्क है। यहां जन्म लेते हैं गर्भ में। इसको गर्भ जेल कहा जाता है। सतयुग में गर्भ-जेल नहीं होता। वहां विकर्म होते ही नहीं। रावण-राज्य ही नहीं। बाप सभी बातें समझाते हैं। साधु सन्त आदि तो कुछ भी नहीं जानते। न कोई शास्त्रों में हैं। मनुष्य जो भी यज्ञ तप दान-पुण्या आदि करते हैं वह सभी हैं भक्ति-मार्ग के। शास्त्र शुरू होते ही हैं द्वापर से। सतयुग त्रेता में शास्त्र का नाम-निशान भी नहीं। यह है ही भक्ति मार्ग के लिए। बाप ने समझाया है भक्ति मार्ग इतना बड़ा है जितना बीज का झाड़ बड़ा होता है। ज्ञान इतना बड़ा है। जितना बीज है। भक्ति इतनी बड़ी है जितना झाड़। कितना फर्क है। यह बातें शास्त्रों में नहीं हैं। बेहद का बाप इस शरीर द्वारा समझाते हैं। इस शरीर को आत्मा भी सुनती है। सुनाने वाला ज्ञान सागर बाप ही है जिसको अपना शरीर नहीं है। वह सदैव शिव ही कहलाते हैं। जैसे वह पुनर्जन्म रहित है वैसे नाम लेने से भी रहित है। उनको कहा ही जाता है सदा शिव। सदैव लिए ही शिव है। जिस का कोई नाम नहीं पड़ता। इसमें प्रवेश करते हैं तो भी इनके जिस्म का नाम उन पर नहीं आता। तुम्हारा है बेहद का सन्यास। वह हद के सन्यासी होते हैं उनके भी नाम फिरते रहते हैं। तुम्हारा नाम भी बाबा ने कितना अच्छा रखा है। प्रजा अनुसार जिनको जो नाम दिये वह गायब हो गये। बाप ने समझा हमारे बने हैं तो कायम रहेंगे। पवित्रता, डायवोर्स नहीं देंगे। परन्तु दे दिये। तो फिर नाम रखने से फायदा ही क्या। सन्यासी फिर जब आते हैं तो पुराना नाम ही चलता है। पर मैं पूछते तो हैं ना। ऐसे नहीं कि सन्यास करते तो उन्हों को मित्र सम्बन्धी आदि याद नहीं आते हैं। बहुत याद आते हैं। यहां भी नम्बरवार है। कोई तो मित्र-सम्बन्धी आदि बिलकुल ही याद नहीं रहते। कोई को तो सभी मित्रसम्बन्धी आदि याद आते रहते हैं। वह तो फंस पड़ते हैं। रग जुटी रहती है। कोई तो झट कनेक्शन टूट जाता है। तोड़ना तो है ही। बाप ने समझाया है कि अभी वापस जाना है। बाप बैठ सिखलाते हैं। सुबह को भी बाबावता रहे थे ना। देखा मन सुख होवत, नयन में बच्चे समाय रहत। क्यों सुख होता है क्यों कि आंखों में (नूर बच्चे) समाये हुवे हैं। आत्मायें हैं ना। बेहद का बाप भी देख-देख खुश होते हैं। लौकिक बाप भी बच्चों को देख बेहद खुश होते हैं ना। जो बहुत अच्छे बच्चे होते हैं। कोई नाफरमानबरदार होते हैं तो बाप ज्यादा इतना खुश नहीं होता। सजा कहते हैं ऐसा बच्चा तो न जनमता तो अच्छा था। नालायक पैदा हुआ। नाम-बदनाम करते हैं। यह बाप सर्विस एयुत सयुत बच्चों को देख कर हर्षित होते हैं। कोई तो नाम-बदनाम करते हैं। सेन्टर सम्भालने लायक बनते फिर भी विकार में चले जाते हैं। बेहद का बाप कहते हैं यह तो कुल कलंकित निकला। ब्राह्मण कुल का नाम बदनाम करते हैं। बच्चों को समझाते रहते हैं किसके भी नाम रूप में नहीं फंसना है। लोग तो सेमी कुल कलंकित कहेंगे। सेमी से फिर फाईनल भी हो जाते हैं। खुद लिखते हैं बाबा हम गिर गये। मुंह काला मुंह कर दिया। माया ने धोखा दे दिया। माया के तूफान बहुत आते हैं। बाप कहते हैं काम कटारी

चलाई यह भी एक दो को दुःख दिया। इसलिए प्रतिज्ञा कराते हैं। खून निकाल कर भी उन से बड़ा पत्र लि
हैं। यह एग्रीमेन्ट रखी जाती है। आज वह है नहीं। बाप कहते हैं अहो माया। तुम बड़ी जबरदस्त हो। ऐ
ऐसे बच्चे जो खुन से भी लिख कर देते हैं तुम उनको भी खा लेती हो। जैसे बाप समर्थ है माया भी समर्थ
है। आधा कल्प का के समर्थी का वर्सा मिलता है, आधा कल्प फिर माया समर्थी गंवाये देती है। यह है भ
की बात। देवी-देवता धर्म वाले हा सालवेन्ट से इनसालवेन्ट बनते हैं। अभी तुम ल०ना० के मंदिर में जावेंगे
तो जिस श्री भावना से पहले जाते थे उस भावना से अभी थोड़े ही जावेंगे। तुम तो वन्डर खावेंगे। इस
चरणे के तो हम हैं। अभी हम पढ़ रहे हैं। इनकी आत्मायें बाबासे पढ़ रही हैं। आगे तो जहांतहां तुम
माया देखते थे। अभी ज्ञान है हरेक के 84 जन्मों की बायोग्राफी को तुम जानते हो। हरेक अपना2 पार्ट ब
हैं। बाप कहते हैं बच्चे सदैव ही हर्षित रहो। यहां के हर्षितपने के संस्कार फिर साथ ले जावेंगे। तुम जानते
हो हम क्या बन रहे हैं। बेहद का बाप हमको यह वर्सा दे रहे हैं। और तो कोई दे भी न सके। एक भी
मनुष्य नहीं जिसको यह पता हो कि यह ल०ना० कहां गये। समझते हैं जहां से आये वहां चले गये। अभी
बाप कहते हैं बुधि से जज करो। भक्ति मार्ग में भी तुमने वेद शास्त्रग्रन्थ आद पढ़े हो। अभी मैं तुमको आ
सुनाता हूं। तुम जज करो भक्ति राईट है या हम राईटस हैं। बाप राम है राईटस। रावण है अनराईटस। रावण
के कारण भारत आज अनराईटस बना है। भारत के कारण सारी दुनिया ही अनराईटियस बना है। हर बात
में असत्य बोलते हैं। ज्ञान की बातों के लिए कहा जाता। तुम समझते हो पहले हम भी असत्य बोलते थे।
दान-पुण्य आद कुछ करते थे पापात्माओं का पापात्माओं से ही लेन-देन था। दान-पुण्य आद करते थे सीढ़ी से
ही उतरते आये। तुम देते भी आत्माओं को हो। पापात्मा पापात्मा को देते हैं तो फिर पुण्यात्मा पुण्यात्मा कैसे बने
वहां आत्माओं की लेन-देन होती है ही नहीं। बाप तुमको इस समय इतना सभी कुछ देकर जाते हैं जो वह
लेन-देन, भाटा कर्ज आद की बात ही नहीं। यहां तो लाखों रुपये का कर्जा ले लेते हैं। इस रावण राज्य में मन
को कदम2 परदुःख है। अभी तुम संगम युग पर हो। तुम्हारी तो कदम कदम में पदम है। देवतायें पदमपति
कैसे बने यह किसको भी पता नहीं है। स्वर्ग तो जरूर था ना। निशानियां हैं बाकी उसका ज्ञान नहीं है कि
राज्य लिया। वहां भी यह पता नहीं रहता कि कौन सी कर्म किये हैं अगले जन्म में। वह तो है ही नई सृष्टि
उसको कहा ही जाता है सुखधाम। 5000 वर्ष की बात है। तुम पढ़ते हो सुख के लिए। पावन बनने
लिए अथाह युक्तियां निकालते हैं। कितना भी भल गंगामें स्नान करे, गुरु करे परन्तु पावन कोई भी हो नहीं
सकते। अभी बाप ने कितना समझदार बनाया है। कोई भी डिफिकल्ट नहीं। भक्ति मार्ग में तो धक्का खाते
कंगाल एकदम बन गये हैं। उतरती कला है ना। बाबा कितनी अच्छी रीत समझाते हैं तीन है रहने के स्थान।
शान्तिधाम वह है आत्माओं का स्वीट होम। जैसे विलायत से आते हैं तो समझेंगे हम स्वीट होम जाते हैं।
तुम्हारा स्वीट होम है शान्तिधाम। बाप भी शान्ति का सागर है ना। जिसका पार्ट ही पिछाड़ी में होगा तो कित
समय शान्तिधाम में रहते होंगे। बहुत ही हल्का पार्ट कहेंगे। इस ड्रामा में तुम्हारा है हीरो हीरोईन का पार्ट
तुम विश्व के मालिक बनते हो। यह राज्य कब और कोई में हो न सके। और कोई के तकदीर में स्वर्ग के
है नहीं। यह तुम बच्चों को ही मिलती है। जिन बच्चों को बाप देखते हैं। कहते हैं बाबा तुम्हारी सेवोलूं,
तुम हां से बाप कहें। बाप भी कहते हैं तुम बच्चों को देखकर बड़ा हर्षित होता हूं। हम 5000 वर्ष
बाद आये हैं। बच्चों को दुःखधाम से सुखधाम ले जाते हैं। क्योंकि काम चिताप पर चढ़ कर जल क
भस्म हो गये हैं। अभी जाकर उनको कब्र से निकालना है। आत्मायें तो सभी हाजिर हैं ना। उन
पावन बनाना है। भक्ति मार्ग के गुरु आद लोग से भी बाप ने छुड़ा दिया है। कहते हैं बुधि से उन सभी
निकाल दो। अभी तो एक सद्गुरु मिला है ना। तो ऑटोमेटिकली और सभी भूल जाते हैं। एकसे ही तेलक

है। तुम्हारा कहना भी यह था आप जब आवेंगे तो हम आप के सिवाय और किसी को याद नहीं करेंगे। आपके ही मत पर चलेंगे। आपके ही श्रीमत से हम बहुत श्रेष्ठ बनेंगे। गाते भी हैं ऊंच ते ऊंच भगवान। उनकी मत भी ऊंच ते ऊंच है। बाप खुद कहते हैं यह ज्ञान अभी तुमको देता हूं वह फिर प्रायः लोप हो जावेगा। भक्ति-मार्ग के शास्त्र तो परम्परा चले आते हैं। कहते हैं रावण भी चला आता है। तुम पूछो रावण को कब से जलाते आये हो। क्योंकि जलाते हो। कुछ भी पता नहीं। अर्थ न समझने कारण कितना शादमाना करते हैं बहुत बीजिटर्स आदि को मंगाते हैं। जैसे सिरोमणी करते हैं रावण को जलाने की। तुम बच्चे जानते हो क्या2 करते हैं। वास्तव में है यह बेहद का खेल। इस में फिर हद का बना देते हैं। समझ नहीं सकते हैं रावण को कब से जलाते आते हैं। दिन प्रति दिन बुत बड़ा बनाते जाते हैं। कहते हैं यह परम्परा से चला आता है। परन्तु ऐसे तो हो नहीं सकता। आखिरीन रावण को कब तक जलाते रहेंगे। तुम तो जानते हो बाकी थोड़ा समय है। फिर तो इनका राज्य ही नहीं होगा। बाप कहते हैं यह रावण सब से पुराना दुश्मन है। इन पर विजय पानी है। मनुष्यों की बुधि में तो क्या2 बातें हैं। वह भी ड्रामा में नूंध है। सेकण्ड व सेकण्ड जो चलता आया है 4900 वर्ष वर्ष हो गये हैं पार्ट में चलते2 तुम तिथ तारीख समय हिसाब निकाल सकते हो। कितना घंटा कितने वर्ष, कितने मास हमारा पार्ट चलता है। यह सारा ज्ञान बुधि में होना चाहिए। बाबा हमको यह समझाते हैं। बाप कहते हैं मैं पतित पावन हूं। तुम मुझे बुलाते ही हो आकर पावन बनाओ। पावन दुनिया होती है शान्तिधाम और सुखधाम में। अभी तो सभी पतित हैं। हमेशा बाबा बाबा करते रहो। यह मूलनाम है। तो सदैव शिव बाबा याद आवेगा। यह हमारा बाबा है। पहले2 है यह। बेहद का बाबा है ना। बाबा कहने से ही वर्से की खुशी में आते हैं। सिर्फ भगवान वा ईश्वर प्रभु कहने से कबोसा विचार नहीं आवेगा। सभी को भूलो। बेहद का बाप समझाते हैं ब्रह्मा द्वारा। यह उनका रथ है। उन द्वारा कहते हैं मैं तुमको यह बताता हूं। इस बैज में सारा ज्ञान भरा हुआ है। पिछाड़ी में तुमको ही याद रहेगा। शान्तिधाम सुखधाम। दुःखधाम को तो भूलते जाते हो। यह भी जानते हो फिर नम्बरवार सभी अपने2 टाईम पर आवेंगे। ईसलामी बोधी, क्रिश्चन आदि कितने धर्म हैं। अनेक भाषाएं हैं। पहले था एक धर्म। फिर इन से कितने निकले हैं। कितनी लड़ाईयां आदि लगी हैं। लड़ते तो सभी हैं क्योंकि निर्वाणके बन जाते हैं ना। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको जो राज्य देता हूं वह कब कोई तुम से छीन न सके। बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं। जो कोई छीन न सके। इसमें अखण्ड अटल अडोल रहना है। माया के तूफान तो जरूर आवेंगे। नम्बरवन को भी तूफान आते हैं। पहले जो आगे होगा वह सब अनुभव करेगा ना। बाबा कहते हैं मैं सभी से पहले अनुभवी बनता हूं। बिमारियां सब हू हमेशा के लिए खत्म होनी है। इसलिए कर्मों का हिसाब-किताब बिमारी आदि जो भी आये तो उसमें डरना न है। यह पिछाड़ी के हैं फिर होंगे नहीं। अभी सभी उथल पुथल खावेंगे। बूढ़ों को भी माया जवान बना देती है। मनुष्य वानप्रस्त लेते हैं तो वहां फिमेल्स नहीं होती है। सन्यासी भी जंगल में चले जाते हैं। वहां भी फिमेल्स नहीं होती है। कोई तरफ देखते भी नहीं हैं। भिक्षा लो और चलो। आगे तो सुपरफ्रूल स्त्री तरफ देखते ही नहीं थे। समझते थे देखने से जरूर बुधि जावेगा। बहन-भाई के सम्बन्ध में भी बाबा कहते हैं बुधि जाती है इसलिए बाबा कहते हैं भाई2 देखो। शरीर का नाम भी नहीं। यह बड़ी ऊंची मुजिल है। एकदम चोटी पर जाना है। यह राजधानी स्थापन होती है। इसमें बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। हम कहते हैं हम तो स्0ना0 बनेंगे। बाप कहते हैं बनो। श्रीमत पर चलो। माया के तूफान तो आवेंगे। कर्मेन्द्रियों से कुछ करना है। दिवाला आदि तो ऐसे भी मारते रहते हैं। ऐसे नहीं कि ज्ञान में आये हैं तब दिवाला मारते हैं। यह तो चला आता है। बाप तो कहते हैं मैं आया ही हूं तुमको पतित से पावन बनाने। दिवाला तो तुम्हारा यहां भी निकलता है। कब बहुत अच्छी भी सर्विस करती, और को समझावती, फिर दिवाला मारती।

मायानड़ी जबरदस्त है। मैं क्या कर सकता हूँ। बाबा चलते2 चलते भी गिर पड़ते हैं। देर हैं। यह बाप हैं। जो मुझे प्यार करते हैं मैं भी उनको प्यार करता हूँ। जो सर्विस करने वाले मुझे बहुत याद आते हैं। को बैठता हूँ तो सिर्फ तुमको नहीं देखता हूँ। जो अच्छे सेन्टर करते हैं वहभी मुझे याद पड़ते हैं। करते हैं बहुतों को सुखदाई बनाते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार उनको भी याद करताहूं। जानता हूँ इनको सर्विस नहीं करती हैं। तो क्या फ्री पद पावेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है ना। बाप हर एक को जानते हैं। इन सभी बच्चों को किसने लाया। तुमपण्डों ने लाया है ना। तुम ही सर्विस करते हो, करते हो। कहांतक बैठ हम माथा मारेंगे। बाप कहते हैंतुम मेरे से भी बहुत अच्छी सर्विस करते हो। तो तुम नमस्ते करते हैं। बाबा तो एक ही जगह पर बैठे हैं। तुमको चारो तरफ जाना पड़ता है। बाबाले तुम सर्विस करते हो। तो तुमको नमस्ते करते हैं। फल भी तुमको मिलता है। यहसारा ड्रामा बना हुआ है। बच्चों को समझाते रहते हैं। वहां से ही याद करते आते हैं। हम जाते हैं बच्चों के झुण्डमें। पुरानी पतित हम पतित शरीरमें। वहतो समझते हैं बैल पर सवारी थी। तुम एरोप्लेन मोटरों में सवारी करते हो और वे बिचारे को बैल पर सवारी। पत्थर ठिक्कर में मिला देते हो। कैसा खेल बना हुआ है। यह बाबा ही समझाते हैं। और लायक बनाते हैं। तुमको तो बाप की ईजंन मिलती है श्रृंगारने लिए। तुम जेवर आदि उतार देते हो। एक राजा का मिशाल है। खिस्वत की बच्ची अच्छी देखी। बोला इनको रानी बनाता हूं। पर उन में अक्ल तो था नहीं। वह बोली मुझे तो अपने घर जाना है।.... (हिस्ट्री सुनाना) ऐसी कथारें भारत में बहुत हीसुनाते हैं। यहां भी कितने आते हैं। मैं उनको मिस्टर की महारानी बनाता हूं फिर भी मुझे छोड़ कर जाते हैं। फिर जब दुःखी होते हैं तो आ जाते हैं। समझते हैं ना। नाहक हमने शादी की। फिर कोई न कोई निकल पड़ते हैं। बच्चे भी जानते हैं 5000वर्ष पहले भी हमऐसे ही बाप से पढ़े थे। पढ़ाने वाला फिर आये हैं। हमको पढ़ा रहे हैं। पवित्र बनने की युक्ति बता रहे हैं। जिसके लिए आधा कल्प तुम ने भक्ति की है। भगवानुवाच है एक भी मोक्ष को नहीं पाते हैं। यहबना बनाया ड्रामा है। गाते भी हो बनी बनाई अभी की बात है। चिन्ता तनिक कीजिए जो अनहोनी होय। नई कोई बात तो होती नहीं। फिर चिन्ता क्यों। अम्मा मरे तो भी हलवा खाना,.... सभी चिन्तायें दूर हो जाती हैं। रचयिता बाप द्वारा ही रचना के आदि मध्य अन्त को जानना है। बाप ही आकर रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ समझाये चक्रवर्ती बनाते हैं। शान्ति भी मिल जाती है। कोई तो एक जन्म पार्ट बजा कर फिर चले जाते हैं तो कितना समय शान्ति में रहा। जैसे मच्छड़ों मिशल आया और गया। याद भी नहीं रहेंगी। याद तो फिर बड़े2 स्टूडेन्ट रहेंगे।

यह है ज्ञान। सुबह को याद की यात्रा। उन से हेल्थ इन से वेल्थ। उनकोअमरलोक कहा जाता है। वहां मरना अक्षर होता ही नहीं। शरीर बुढ़ा हुआ तो दिल होती है अभी शरीर छोड़ कर दूसरा लेवें। (सर्प का मिशाल।) यह दृष्टान्त भी अभी की है। जो फिर भक्ति मार्ग में बतलाते रहते हैं। होता कुछ भी नहीं है।

दो चार एडजेक्टस हैं मुख्य। एक तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। और गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये भाई2 समझना। तुम जानते हो बाप आया हुआ है हम भाईयों को पढ़ाने। संस्कार आत्मा में रहते हैं ना। तुम जानते हो 84 जन्मों का पार्ट अभी हमारा पूरा हुआ। फिर शुरू होगा सतयुग में सुख का पार्ट। पुरानी दुनिया का पार्ट पूरा हुआ। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।

आगरा में तीसरा रूहानी सेन्टर खुला है जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं। :-

BRAHMA KUMARIS
207/2. NORTH VIJAY NAGAR, RING ROAD,
AGRA.5